बजरंग बाण

॥ दोहा ॥

निश्चय प्रेम प्रतीति ते,
विनय करें सनमान ।
तेहि के कारज सकल शुभ,
सिद्ध करें हनुमान ॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमंत संत हितकारी ।
सुन लीजै प्रभु अरज हमारी ॥
जन के काज विलम्ब न कीजै ।
आतुर दौरि महासुख दीजै ॥

जैसे कूदि सिन्धु महि पारा ।
सुरसा बदन पैठि विस्तारा ॥
आगे जाय लंकिनी रोका।
मारेहु लात गई सुर लोका ॥

जाय बिभीषण को सुख दीन्हा ।
सीता निरखि परमपद लीन्हा ॥
बाग उजारि सिन्धु महँ बोरा ।
अति आतुर यम कातर तोरा ॥

अक्षय कुमार मारि संहारा ।
लूम लपेटि लंक को जारा ॥
लाह समान लंक जरि गई ।
जय-जय धुनि सुरपुर में भई ॥

अब बिलम्ब केहि कारन स्वामी ।
कृपा करहु उर अन्तर्यामी ॥
जय जय लखन प्रान के दाता ।
आतुर होई दु:ख करहु निपाता ॥

जै गिरिधर जै जै सुख सागर ।
सुर-समूह-समरथ भट-नागर॥
ओम हनु हनु हनु हनुमंत हठीले ।
बैरिहि मारु बज्र की कीले॥

गदा बज्र लै बैरिहि मारो ।
महाराज प्रभु दास उबारो ॥
ओंकार हुंकार महाप्रभु धाओ ।
बज्र गदा हनु विलम्ब न लाओ ॥

ओम ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा ।
ओम हुं हुं हुं हनु अरि उर-सीसा॥
सत्य होहु हरी शपथ पायके ।
राम दूत धरु मारू जायके॥

जय जय जय हनुमन्त अगाधा ।

दुःख पावत जन केहि अपराधा ॥
पूजा जप-तप नेम अचारा ।
नहिं जानत हो दास तुम्हारा ॥

वन उपवन मग गिरि गृह मांहीं ।
तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं ॥
पायं परौं कर जोरी मनावौं ।
येहि अवसर अब केहि गोहरावौं ॥

जय अंजनी कुमार बलवंता ।
शंकर सुवन वीर हनुमंता ॥
बदन कराल काल कुलघालक।
राम सहाय सदा प्रतिपालक ॥

भूत प्रेत पिसाच निसाचर।
अगिन वैताल काल मारी मर ॥
इन्हें मारु, तोहि शपथ राम की ।
राखउ नाथ मरजाद नाम की ॥

जनकसुता हरि दास कहावो ।
ताकी शपथ विलम्ब न लावो ॥
जै जै जै धुनि होत अकासा ।
सुमिरत होत दुसह दुःख नासा ॥

चरण शरण कर जोरि मनावौं ।
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ॥
उठु उठु चलु तोहि राम-दोहाई ।

पायँ परौं, कर जोरि मनाई ॥

ओम चं चं चं चं चपल चलंता ।
ओम हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता ॥
ओम हं हं हाँक देत कपि चंचल ।
ओम सं सं सहमि पराने खल-दल ॥

अपने जन को तुरत उबारौ ।
सुमिरत होय आनंद हमारौ ॥
यह बजरंग बाण जेहि मारै।
ताहि कहो फिर कोन उबारै ॥

पाठ करै बजरंग बाण की ।
हनुमत रक्षा करैं प्रान की ॥
यह बजरंग बाण जो जापैं ।
ताते भूत-प्रेत सब कापैं ॥

धूप देय अरु जपै हमेशा ।
ताके तन नहिं रहै कलेसा ॥

॥ दोहा ॥

प्रेम प्रतीतिहि कपि भजै,
सदा धरै उर ध्यान ।
तेहि के कारज सकल सुभ,
सिद्ध करैं हनुमान ॥